ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 66-68**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- I, Issues-39, YEAR- Jan.-March 2026

राष्ट्रीय स्वाभिमान का प्रतीक –लाचित बोरफुकन

श्रीमती निर्मला सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर– इतिहास, ठा बीरी सिंह महाविद्यालय, टूंडला – फिरोजाबाद (उ0प्र0), भारत

Received-18.01.2026, Revised-26.01.2026, Accepted-01.02.2026 **E-mail:singhnirmala68@gmail.com**

सारांशः भारत भूमि के गौरवशाली अतीत में हजारों सालों से ऐसे अनेकों वीर, साहसी और देशभक्त योद्धाओं ने जन्म लिया है, जिन्होंने मातृभूमि की रक्षा करने के लिए अव्दितीय शौर्य, हिम्मत और बलिदान का परिचय दिया है। असम के अहोम साम्राज्य के सेनापति लाचित बोरफुकन ऐसे ही अप्रतिम योद्धा,प्रशासक, कूटनीति और रणनीतिकार थे, जिनका नाम भारत और असम के सैन्य इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। कुछ इतिहासकारों ने इन्हें उत्तर–पूर्व के छत्रपति शिवाजी की उपाधि से विभूषित किया है, क्योंकि 17 वीं शताब्दी में जब औरंगजेब साम्राज्य विस्तारवादी नीति के तहत भारत के सभी स्वतंत्र राज्यों को अपने अधीन करने के लिए आक्रमण कर रहा था, तब औरंगजेब के आदेश पर उसके सेनापति राजपूत राजा राम सिंह ने शक्तिशाली मुगल और राजपूत सेना के साथ असम पर आक्रमण किया, तब अहोम साम्राज्य के सेनापति लाचित बोरफुकन ने सीमित संसाधनों से ही मुगल साम्राज्य की शक्तिशाली सेना को 1669 के अलाबोई के युद्ध और 1670 के सरायघाट के युद्ध में बुरी तरह से पराजित किया और मुगलों के विजय रथ को रोक दिया। इस शोध पत्र में लाचित बोरफुकन के जीवन, सैन्य नेतृत्व, सरायघाट के युद्ध और असम की रक्षा में उनके योगदान का अध्ययन किया गया है।

कुंजीभूत शब्द– राष्ट्रीय स्वाभिमान, स्वतंत्रता, इतिहास, सेनानी, साम्राज्य, योगदान, मातृभूमि, आक्रमण, नेतृत्व क्षमता, विस्तारवादी नीति।

अध्ययन का उद्देश्य– ब्रह्मपुत्र घाटी के नियंत्रण को लेकर मुगल साम्राज्य और अहोम साम्राज्य के बीच 17 वीं शताब्दी में अनेक युद्ध लड़े गए गए। अहोम सेनापति लाचित बोरफुकन ने 1770 में सरायघाट के युद्ध में मुगलों को बुरी तरह पराजित कर असम से बेदखल कर दिया। उसके पश्चात असम पर मुगल आक्रमण लगभग समाप्त हो गए। लाचित बोरफुकन के साहस, वीरता, देशभक्ति, नेतृत्व क्षमता और मातृभूमि की रक्षा में योगदान को भारत की युवा पीढ़ी के समक्ष प्रस्तुत करना ही इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य है।

अध्ययन की पद्धति– अहोम साम्राज्य के सेनापति लाचित बोरफुकन के साहस, वीरता, नेतृत्व क्षमता, कूटनीति एवं मातृभूमि की रक्षा में लड़े गए अलाबोई के युद्ध, सरायघाट के युद्ध और परिणामों की आधार सामग्री (डेटा) प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों से एकत्रित की गई है। सेनापति लाचित बोरफुकन के वीरतापूर्ण कार्यों की आधार सामग्री (डेटा) को विभिन्न पत्र पत्रिकाओं और पुस्तकों से एकत्रित करके एवं विश्लेषण करके को इस शोध पत्र को संकलित किया गया है।

प्रस्तावना– अहोम साम्राज्य भारत के असम राज्य में ब्रह्मपुत्र घाटी में स्थित था ।यह साम्राज्य लगभग 600 सालों तक फलता फूलता रहा। इसकी राजधानी चराइदेव थी, जो गुवाहाटी के पूर्व में स्थित थी। अहोम साम्राज्य के सेनापति लाचित बोरफुकन का जन्म 24 नवंबर 1622 में मोमाई तामुली बोरबरुआ के सबसे छोटे बेटे के रूप में हुआ था। मोमाई तामुली बोरबरुआ अहोम सेनापति, राजनेता और कुलीन थे और बोरबरुआ कार्यालय के पहले पदाधिकारी थे।[1] लाचित ने बचपन में ही युद्धकला, घुड़सवारी, तलवारबाजी और सैन्य प्रशिक्षण में विशेष दक्षता प्राप्त की। लचित ने अपने पिता से राजनीति, कूटनीति और प्रशासनिक दक्षताओं की बारीकियां सीखीं और लाचित अहोम राजा और राज्य के प्रति वफादारी की भावना के साथ बड़े हुए।[2] जब लाचित ने दिखौमुख में अपने पिता के नेतृत्व में मुगल सेनापति मीर जुमला के सैनिकों को भगाने में वीरता का परिचय दिया, तो अहोम राजा जयध्वज सिंह लाचित से अत्यधिक प्रभावित हुए और उन्होंने लाचित को पहले 'घोरा बरुआ' (शाही घोड़ों का अधीक्षक) 'दुलिया बरुआ' (राजा के पालकी वाहकों का अधीक्षक) 'सिमालुगुरिया फुकन' (राजधानी के निकट सिमालुगुरी में तैनात लेबी कमांडेंट) 'डोकला सरिया वरुआ' (शाही पालकी के साथ चलने वाले सशस्त्र सैनिकों का अधीक्षक) जैसे अनेक पदों पर नियुक्त किया। लाचित ने प्रत्येक पद की जिम्मेदारियों को पूरी ईमानदारी और कर्तव्य निष्ठा से निभाया।

जनवरी 1663 में मुगल सेनापति मीर जुमला ने अहोम सेना को बुरी तरह पराजित किया और उसके बाद मुगलों और अहोमों में घिलाझारी घाट की संधि हुई, जिसके अनुसार अहोम राजा जयध्वज सिंह ने पश्चिमी असम मुगलों को सौंप दिया और तीन लाख रुपये एवं नब्बे हाथियों को युद्ध क्षतिपूर्ति के रूप में देने का वादा किया। इसके अलावा राजा को अपनी 7 वर्षीय इकलौती बेटी रमणी गभरू और भतीजी को भी मुगल सम्राट के हरम में भेजना पड़ा। इस अपमानजनक संधि को राजा जयध्वज सिंह सहन नहीं कर सके, कुछ समय बाद ही 1663 में राजा जयध्वज सिंह की मृत्यु हो गई। राजा जयध्वज सिंह की मृत्यु के पश्चात उनके चचेरे भाई चक्रध्वज सिंह को राजा बनाया गया। युद्ध क्षतिपूर्ति की रकम के एक बड़े हिस्से का भुगतान करना अभी बाकी था। युद्ध क्षतिपूर्ति की बकाया रकम वसूलने के लिए गुवाहाटी का नया मुगल फौजदार सैयद फिरोज खान राजा चक्रध्वज सिंह को बार–बार धमकी भरे पत्र भेज जा रहा थे। सैयद फिरोज खान के पत्रों को पढ़ने के पश्चात अहोम राजा ने मुगलों से लड़ने का मन बना लिया। राजा चक्रध्वज सिंह ने 1665 में अपने मंत्रियों और कुलीनों की सभा बुलाकर मुगलों को पश्चिमी असम से खदेड़ने की दिशा में कार्य करने का आदेश दिया। 1667 में राजा चक्र ध्वज सिंह ने लाचित को बोरफुकन (सेना प्रमुख) के पद पर नियुक्त किया और अहोम साम्राज्य से मुगलों को बाहर निकालने की जिम्मेदारी लाचित बोरफुकन को सौंप दी। लाचित बोरफुकन ने तुरंत मुगलों से युद्ध करने की तैयारी शुरू कर दी गई। राज्य में खाद्य सामग्री और सैन्य उत्पादन में वृद्धि की गई। नये किले और चौकियों का निर्माण आरंभ हुआ तथा पुराने किलों और चौकियों की मरम्मत कराकर, प्रशिक्षित सेनाओं की नियुक्तियां की गई। जैंतिया और कछारी के राजाओं के साथ गठबंधन कर अहोम राज्य को मजबूती प्रदान की गयी और एक नई सेना का गठन कर, उसे प्रशिक्षित और अनुशासित किया गया।[3] युद्ध की पूरी तैयारी कर लेने के बाद अगस्त 1667 में अहोम सेना ने लाचित बोरफुकन के नेतृत्व में मुगलों को पराजित करने एवं गुवाहाटी पर कब्जा करने के लिए प्रस्थान किया।

गुवाहाटी पर अधिकार– लाचित बोरफुकन ने कालियाबोर को अपनी सेना का आधार शिविर बनाया। लाचित ने अहोम सेना को ब्रह्मपुत्र घाटी में दो डिवीजन में विभाजित कर दिया और मुगल सेना को दोनों ओर से घेर कर अहोम सेना ने आक्रमण किया, गुवाहाटी का मुगल गवर्नर सैयद फिरोज खान और उसकी सेना इस अचानक आक्रमण के लिए तैयार नहीं थे, इसलिए अहोमों के

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

आक्रमण के सामने मुगल सेना टिक ना सकी और अहोमों ने श्रंखलाबद्ध तरीके से मुगलों पर विजय हासिल की। उत्तरी तट पर डेकाफुकन ने सितंबर 1667 में वहबारी पर अधिकार कर लिया। दक्षिणी तट पर नौसालिया फुकन ने कपिली नदी और गुवाहाटी के बीच काजली, सोनापुर,पानीखेतौं और तितमारा के किलों पर अधिकार कर लिया। गुवाहाटी के उत्तर में शाह बरूज और रंगमहल के किलों पर भी अहोम सेना का अधिकार हो गया। लाचित के नेतृत्व में अहोम सेना ने 4 नवंबर 1667 में इटाखुली और गुवाहाटी के इलाकों पर कब्जा कर लिया और मुगलों को मनाहा नदी के मुहाने तक खदेड़ दिया गया।[4] मुगल सूबेदार सैयद फिरोज खान को बंदी बना लिया गया। दो महीने की छोटी सी अवधि में अहोमों ने अपना खोया हुआ राज्य, प्रतिष्ठा और गौरव वापस प्राप्त कर लिया। गुवाहाटी और पश्चिम असम पर अहोमों का पुनः कब्जा अहोम इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना थी।

रंगमती में संघर्ष– दिसंबर 1667 में मुगल सम्राट औरंगजेब को अहोमों द्वारा गुवाहाटी पर कब्जा कर लेने की सूचना मिली। औरंगजेब ने उत्तरी–पूर्वी सीमा (अहोम साम्राज्य) पर अधिकार करने के लिए आमेर के मिर्जा राजा जयसिंह की पुत्र राजा राम सिंह को एक शक्तिशाली सेना के साथ गुवाहाटी भेजा तथा राजा राम सिंह की मदद के लिए गुवाहाटी के पूर्व फौजदार रशीद खान को भी साथ में भेजा। राजा राम सिंह ने फरवरी 1669 में रंगमती पहुंचकर मनाहा में तैनात अहोम सरदार को बुरी तरह पराजित किया।[5] राजा राम सिंह के साथ विशाल मुगल और राजपूत सेना को देखकर लाचित बोरफुकन अत्यधिक चिंतित हो गया उसने सोचा" यह एक त्रादशी है कि मेरा देश मेरे बोरफुकन रहते हुए इस भयानक तबाही का सामना कर रहा है। मेरा राजा कैसे बचेगा। मेरे लोग कैसे बचेंगे और मेरी सन्तानें कैसे बचेंगी।[6]

लचित बोरफुकान की रणनीतिक योजना– मुगलों की विशाल सेना को पराजित करने के लिए लाचित बोरफुकन ने अन्य सरदारों के साथ मिलकर विचार विमर्श किया और खुले मैदान में युद्ध करने के स्थान पर गुवाहाटी के पहाड़ी इलाकों में युद्ध करने का निश्चय किया, क्योंकि मुगल सेना खुले मैदान में युद्ध करने की अभ्यस्त थी। लाचित मुगलों को गुवाहाटी के पहाड़ी क्षेत्रों में पर्याप्त युद्ध का मैदान ना देकर, उन्हें नौसैनिक युद्ध करने के लिए मजबूर करना चाहता था, क्योंकि मुगलों की नौसैनिक शक्ति अत्यधिक कमजोर थी। नौ सैनिक युद्ध में मुगलों को आसानी से हराया जा सकता था। लाचित ने गुवाहाटी में मिट्टी के तटबंधों (किलों) की एक जटिल प्रणाली तैयार करायी। कहा जाता है उत्तर गुवाहाटी के अमीनगांव में तटबंध निर्माण कार्य में लापरवाही करने पर लाचित ने अपने चाचा को कर्तव्यहीनता के लिए मृत्यु दण्ड दे दिया था और कहा था कि "मेरा चाचा मेरे देश से बड़ा नहीं है।" लाचित ने अपनी सेनाओं को पीछे हटने का आदेश दिया, जिससे मुगलों को आसानी से गुवाहाटी के पहाड़ी क्षेत्र में लाया जा सके। लाचित ने राजपूत राजा राम सिंह के साथ एक दिखावटी बातचीत का दौर भी शुरू किया, लेकिन यह बातचीत बेनतीजा रही । इसी बीच गुवाहाटी क्षेत्र में अहोम सेना और मुगल सेना के बीच युद्धों का दौर प्रारंभ हो गया, लेकिन इन युद्धों के परिणाम अस्थाई रहे। इस अवधि में अहोम सेना ने "दग्गा जुधा" (गोरिल्ला युद्ध) के द्वारा मुगल सेनाओं को बहुत अधिक परेशान किया और उन्हें अत्यधिक आर्थिक, मानसिक और शारीरिक क्षति भी पहुंचाई । असमिया सेना आखिरी दम तक मुगलों से लड़ने को तैयार थी।[7]

अलाबोई का युद्ध– लाचित बोरफुकन मुगल सेना से खुले मैदान में युद्ध नहीं करना चाहते थे, लेकिन अहोम राजा के अधीरता में दिए आदेश के कारण अहोम सेनाओं को ब्रह्मपुत्र से लेकर सेसा नदी तक फैले मैदान में मुगलों से युद्ध करना पड़ा। अलाबाई के युद्ध में अहोम सैनिक मुगलों से बहुत वीरता से लड़े, लेकिन 40000 अहोम सैनिकों 20000 मुगल सैनिकों के सामने युद्ध में टिक ना सके, 5 अगस्त 1669 को मुगलों ने अहोम सेना को अलाबोई के युद्ध बुरी तरह से पराजित किया। इस युद्ध में अहोम सेना के 10000 बहादुर सैनिक शहीद हो गए।[8] अलाबोई युद्ध का नरसंहार अहोम सेना के लिए एक गंभीर क्षति थी, लेकिन अलाबोई युद्ध में मिली विजय से दुश्मन को कोई निर्णायक लाभ नहीं मिला।[9] औरंगजेब मुगल सेनाओं की सफलताओं से अत्यधिक प्रसन्न हुआ।

सरायघाट का युद्ध– अलाबोई के युद्ध में अहोमों की वीरता और साहस को देखकर राम सिंह अत्यधिक प्रभावित और चिंतित था, इसलिए उसने अहोमों को पराजित करने के लिए कूटनीतिक प्रयास करने प्रारंभ कर दियो। राम सिंह ने अहोम सेनापतियों को रिश्वत देने और उनके बीच फूट डालने का भी प्रयास किया, इसकी अतिरिक्त 1639 की असुरार अली की संधि को पुनः बहाल करने का प्रस्ताव भी अहोम राजा के पास भेजा, लेकिन अहोम राजा और उसके सेनापतियों ने संधि के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। इसी बीच 1670 में राजा चक्रध्वज सिंह की मृत्यु हो गई और उसके बाद राजा चक्रध्वज सिंह के भाई उदयादित्य सिंह ने अहोम राज सिंहासन पर बैठाया गया।

राम सिंह ने अब गुवाहाटी पर अपना अंतिम और निर्णायक आक्रमण करने के निश्चय किया। राम सिंह ने मुगल एडमिरल मुनव्वर खान और बंगाल के सूबेदार शाइस्ता खान के साथ गुवाहाटी के उत्तरी तट की ओर बढ़ना शुरू किया। इस समय लाचित बोरफुकन और उसका एडमिरल दोनों गंभीर रूप से बीमार थे, इसलिए नारा हजारिका अहोम सेनाओं का संचालन कर रहे थे। लालुकसोला फुकन के नेतृत्व में अहोम सेनाओं ने मुगलों को भूमि युद्ध में परास्त किया, लेकिन युद्ध में सेनापति लाचित बोरफुकन की अनुपस्थिति के कारण अहोम सेनाएं पूरे मनोयोग से युद्ध नहीं कर पा रही थी, इसीलिए मुगल नौकाओं ने अहोम नौकाओं को सराय घाट के उत्तर में पीछे हटने के लिए मजबूर किया। मुगल सेनाओं द्वारा घेर लिए जाने के डर से अहोम भूमि सेनाएं भी पीछे हट गई। सेनाओं को पीछे हटते देख, बीमारी की हालत में ही लाचित बोरफुकन नौका पर सवार हुए। लाचित बोरफुकन के युद्ध में शामिल होते ही अहोम सैनिकों का मनोबल अत्यधिक बढ़ गया। उन्होंने मुगलों पर संयुक्त रूप से सामने और पीछे से हमला किया और मुगल सेनाओं को बुरी तरह पराजित किया और मुगल एडमिरल मुनव्वर खान युद्ध में गोली लगने से मारा गया। अहोम सेनाओं ने मुगलों को अहोम साम्राज्य की सीमाओं से बाहर खदेड़ दिया। दारांग में अहोमों ने मुगलों को बुरी तरह से पराजित किया, राम सिंह ने 7 अप्रैल 1671 को कामरूप छोड़ दिया[10], सरायघाट के युद्ध में प्राप्त विजय अहोम साम्राज्य के लिए एक अमूल्य विजय थी, लेकिन लाचित बोरफुकन इस अमूल्य विजय का आनंद लेने के लिए जीवित नहीं रहे, सरायघाट के युद्ध में मुगल सेना को पराजित करने के एक साल बाद ही अप्रैल 1672 में कालियाबोर में लाचित बोरफुकन की मृत्यु हो गई।[11] असम में जोरहाट के टेक में एक मैदाम (क़ब्रगाह) में लाचित बोरफुकन को शाही सम्मान के साथ दफनाया गया, यहां अहोम राजघरानों के सदस्यों और रईसों को दफनाया जाता हैं।

निष्कर्ष– लाचित बोरफुकन न केवल असम के, बल्कि संपूर्ण भारत के गौरवशाली अतीत की एक अमूल्य धरोहर है, उन्होंने छोटे से अहोम साम्राज्य को सीमित संसाधनों से ही शक्तिशाली मुगल साम्राज्य के सामने आत्म समर्पण करने से बचाया। अपनी जान की परवाह न करते हुए, बीमारी की हालत में ही सरायघाट के युद्ध का नेतृत्व किया और ऐसी अमूल्य विजय प्राप्त की, जो भारतीयों को युगों युगों तक प्रेरणा देती रहेगी। लाचित बोरफुकन भारतीय इतिहास के अनमोल रतन है, इसीलिए लाचित बोरफुकन को पूरे देश में सम्मान पूर्वक याद किया जाता है, असम में हर वर्ष 24 नवंबर को लाचित दिवस के रूप में मनाया जाता है। भारतीय रक्षा अकादमी

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- I, Issues-39, YEAR- Jan.-March 2026

के सर्वश्रेष्ठ कैडेट को लाचित बोरफुकन स्वर्ण पदक प्रदान किया जाता है।[12] इस प्रकार अहोम साम्राज्य के सेनापति लाचित बोरफुकन एक ऐसे अप्रतिम योद्धा,प्रशासक, कूटनीति और रणनीतिकार थे, जिनका नाम भारत और असम के सैन्य इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। इसीलिए कुछ इतिहासकारों ने इन्हें उत्तर–पूर्व के छत्रपति शिवाजी की उपाधि से विभूषित किया है।[13]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सरकार, जे एन (1992) असम– मुगल संबंध अध्याय– 8, बार पुजारी एच. के.– असम का व्यापक इतिहास, खंड 2 असम प्रकाशन बोर्ड गुवाहाटी पृष्ठ संख्या– 148 256.
2. गोहेन, वीरेंद्र कुमार (2012) लाचित बोरफुकन– असम के राष्ट्रीय नायक, असम प्रकाशन परिषद, गुवाहाटी पृष्ठ– 18.
3. मुगलों की विरुद्ध युद्ध की तैयारी का एक ग्राफिक विवरण पुरानी (असम बुरांजी– परंपरागत लेख) में उपलब्ध है।
4. एस. के. दत्ता– असम बुरांजी (परंपरागत लेख) पी पी–28, 29.
5. एस. के. भुइयां– लाचित बोरफुकन एंड हिज टाइम्स पी पी 28–29. 112–113.
6. सरकार, जे. एन. (1992) असम– मुगल संबंध अध्याय, पी पी– 229.
7. सरकार, जे. एन. (1992) असम– मुगल संबंध अध्याय, पी पी– 214.
8. सरकार, जे. एन. (1992) असम– मुगल संबंध अध्याय, पी पी– 221.
9. एस के भुइयां– लाचित बोरफुकन एंड हिज टाइम्स पी पी 65, 66, 69, 70.
10. गोगाई, परमेश्वर– (1968) ताई और ताई साम्राज्य, गुवाहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी।
11. असम सरकार– लाचित बोरफुकन, दा अनसुंग हीरो आफ असम, डायरेक्ट्रेट आफ कल्चरल अफेयर्स, असम 2021.
12. रक्षा मंत्रालय भारत सरकार की वेबसाइट https11mod.gov.in
13. Assam history portal https/assamhistory.com lachit borfukan.

*****